International Journal of Sanskrit Research 2015; 1(7): 84-86

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2015; 1(7): 84-86
© 2015IJSR
www.sanskritjournal.com
Received: 21-09-2015
Accepted: 24-10-2015

कैलाश चन्द्र सनवाल
शोध छात्र, संस्कृत विभाग,
कुमाऊ विश्वविद्यालय,
नैनिताल, उत्तराखण्ड, भारत

डा. ब्रजेश कुमार पाण्डेय
शोध निर्देशक
एसोसिएट प्रोफेसर,
महिला महाविद्यालय, हल्द्वानी (नैनीताल)
उत्तराखण्ड, भारत

Correspondence
कैलाश चन्द्र सनवाल
शोध छात्र, संस्कृत विभाग,
कुमाऊ विश्वविद्यालय,
नैनिताल, उत्तराखण्ड, भारत

संस्कृत साहित्य में डा. सत्यव्रतशास्त्री का योगदान

कैलाश चन्द्र सनवाल, डा. ब्रजेश कुमार पाण्डेय

वैदिककाल से लेकर अद्यावधि पर्यन्त भारतीय संस्कृत साहित्याकाश पर देदीप्यमान नक्षत्र के समान सुधियों ने अपने अनुपम ज्ञान से सहृदयजनों को आप्लावित किया है। विद्वान कवियों ने अनेकों ग्रन्थों का सृजन करके भारतीय संस्कृत साहित्य को समृद्धशाली बनाने का गौरव प्राप्त किया है। उन्होंने अधिकाशंतः भारतीय महान चरित्रों का उच्चादर्श पर स्थापित करने के लिए अपनी अमृतवर्षिणी लेखनी का प्रयोग किया है। उन्हीं प्रतिभाशाली विद्वानों में से आधुनिक संस्कृत साहित्य के मूर्धन्य विद्वान डा० सत्यव्रतशास्त्री का पदार्पण हुआ। जिन्होंने अपनी चहुँमुखी प्रतिभा एवं वैदुष्य से साहित्य–जगत को अमूल्य योगदान देने के साथ–साथ भारतीय महापुरूषों का चरित्रगान कर उनके उच्च आचरण द्वारा जनमानस को प्राप्त होने वाली सद्प्रेरणा तथा शिक्षा का महत्व प्रतिपादित किया है।

जन्मसमय

डॉ0 सत्यव्रतशास्त्री का जन्म समय 29 सितम्बर 1930 में लाहौर में हुआ था, जो अब पाकिस्तान का एक शहर है। इनके पिता का नाम स्वर्गीय पं0 चारूदेव शास्त्री था जो विशेष रूप से पाणिनीय व्याकरण के मूर्धन्य विद्वान थे जो कालान्तर में 'अभिनव पाणिनी' के नाम से प्रसिद्ध हुये।[1]

शिक्षा–दीक्षा

देश के विभाजन के पश्चात् इन्होंने पिता के साथ रहकर अम्बाला और जालन्धर में अध्ययन किया। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा अपने पितृश्री स्व0पं0चारूदेव शास्त्री के चरणों में हुई तथा व्याकरण का ज्ञान अर्जित किया तत्पश्चात् काशी गये। वहाँ अपने पं0 शुकदेव झा एवं सिद्धेश्वर वर्मा से ज्ञानार्जित किया। बी0ए0 आनर्स (संस्कृत) में पंजाब विश्विद्यालय से स्नातक परीक्षा उच्च अको से उत्तीर्ण कर कीर्तिमान स्थापित किया, तत्पश्चात् स्नातकोत्तर परीक्षा संस्कृत में प्रथम स्थान प्राप्त कर विश्वविद्यालय पदक अर्जित किया। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में 'भर्तृहरिकृत' वाक्यपदीय में 'दिक्कालमीमांसा' विषय पर पी0एच0डी0 (शोध) की। डा0 संत्यव्रतशास्त्री का अध्ययन दोनों ही पद्धतियों से हुआ है, पारंपरिक एवं आधुनिक।[2]

अध्यापन

उन्नीस सौ पचपन में आपने दिल्ली विश्वविद्यालय में संस्कृत अध्यापन का कार्य आरम्भ किया जहाँ निरन्तर अपने चालीस वर्षो के अध्यापन–काल में विभागाध्यक्ष तथा कला संकायाध्यक्ष जैसे पदों को सुशोभित किया। आप श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय पुरी के कुलपति पद पर भी आसीन हुए तथा विश्व के तीन महाद्वीपों के छः विश्वविद्यालयों–चुलालौंड्कौर्न विश्वविद्यालय तथा सिल्पाकौर्न विश्वविद्यालय –बैंकाक, उत्तरपूर्वी बौद्ध विश्वविद्यालय नौड्खाई, थाइलैण्ड, कार्ल एरहार्ड विश्वविद्यालय टयूबिंगन जर्मनी, कैथालिक विश्वविद्यालय ल्यूवेन बैल्जियम् एवञ्च एल्बर्टा विश्वविद्यालय एडमण्टन कनाडा में अभ्यागत आचार्य के रूप में अध्यापन का गौरव प्राप्त है। आपने अनेक राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में भाग लिया है और तत्तत्सत्रों की अध्यक्षता की है। यूरोप, लातीन तथा उत्तरी अमेरिका, दक्षिण पूर्व एशिया एवञ्च सुदूरपूर्व के अनेकों देशों में नानाविध विषयों पर शताधिक भाषण भी दिये है। संस्कृत में ज्ञानपीठ पुरूस्कार प्राप्त करने वाले ये एकमात्र रचनाकार है। सन् 2013 में आपको भारत सरकार ने राष्ट्रीय संस्कृत आयोग का अध्यक्ष नियुक्त किया है। इस समय दिल्ली में साहित्य जगत् को अपने परिश्रमयुक्त लेखन कार्य से समृद्ध कर रहे है।[3]

डॉ0 सत्यव्रत शास्त्री की रचनाओं का संक्षिप्त परिचय

प्रो0 सत्यव्रत शास्त्री जी ने बत्तीस ग्रन्थों की रचना की है। एक सौ तीस ग्रन्थों पर प्राक्कथन लिखे हैं। शतशः शोध–निबन्ध प्रकाशित किये हैं और समीक्षाएं लिखी है। इनकी मौलिक कृतियों में तीन

महाकाव्य, तीन खण्डकाव्य तथा दो खण्डों का पत्रकाव्य है, जिनकी श्लोक संख्या छः हजार से भी अधिक है।[4]

दिने–दिने याति, मदीयजीवितम्

आपने संस्कृत में 'दिने–दिने याति, मदीयजीवितम्' शीर्षक से एक डायरी भी प्रकाशित की है जो इस विधा में (संस्कृत में) अपने ढंग की प्रथम रचना है।[5]

भवितव्यानम् द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र

इनकी यह प्रथम कृति है तीन खण्डो की इनकी आत्मकथा–भवितव्यानम् द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र जिसकर प्रथम खंड वर्तमान में ही प्रकाशित हुआ है।[6]

समीक्षात्मक लेखन

समीक्षात्मक लेखन में इनकी विशेष उल्लेखनीय कृतियाँ है–''वाल्मीकि रामायण का भाषाविषयक अध्ययन''केवल रामायण का ही नहीं अपितु किसी भी संस्कृत ग्रन्थ का प्रथम भाषाविषयक अध्ययन ग्रन्थ है।[7]

कालीदास–सम्बद्ध कृतियों के समीक्षामत्क ग्रन्थ

kalidasa in Modern Sanskrt Literature तथा New Experiments in kalidasa ं एवच्च सात खण्डों का ग्रन्थ – discovery of Sanskrit Tveasures -जिसमें संस्कृत वाङ्गमय के अनेक अद्यावधि अनालोचित पक्षों पर प्रकाश डाला गया है।[8]

थाईदेश परक तीन अनुसंधान ग्रंथ [9]

1. संस्कृत एण्ड इडियन कल्चर इन थाईलैण्ड
2. थाईदेश के ब्राह्मण तथा थाईदेश के संस्कृत अभिलेख।

आपने संस्कृत बाङ्गमय को उन विधाओं में समृद्ध किया है जिनमें या तो रचना हुई ही नहीं या बहुत कम हुई। यहाँ डॉ0 सत्यव्रतशास्त्री की प्रमुख रचनाओं का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत है–

कविवर डॉ0 सत्यव्रतशास्त्री ने तीन महाकाव्यों की रचना की जिनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है–

1- **श्रीबोधिसत्वचरितम्[10]-**चौदह सर्गो का प्रथम महाकाव्य श्री बोधिसत्वचरितम् पालि–साहित्य की तथा संस्कृत में भी प्राप्त होने वाली कुछ जातक कथाओं पर आधारित है। इस महाकाव्य में बुद्धत्त्व प्राप्ति से पूर्व, बुद्ध के पूर्वजन्मों की कथाएं हैं। बोधिसत्व नाना जन्म ग्रहण करके उदात्त कर्म करता है। और अन्ततः बुद्धत्त्व को प्राप्त करता है[11]।

2- **इन्दिरागान्धीचरितम्[12]-** इस महाकाव्य में पच्चीस सर्ग है। यह भारतीय स्वातन्त्रय संग्राम के अन्तिम चरण में कालखण्ड के कथानक पर आधारित है। जिसमें महात्मा गान्धी का पदार्पण हो चुका था और प्रयाग में बसा कश्मीरी नेहरू परिवार उस संग्राम के सर्वात्मना जुड़ चुका था। पं0 मोतीलाल नेहरू का 'आनन्दभवन' उसका केन्द्र बन चुका था। महाकाव्य की चरितनायक इन्दिरा का जीवन उसी घटना–संकुल वातावरण में विकसित होता है[13]।

महाकाव्य के प्रथम सर्ग से लेकर बीसवें सर्ग तक इन्दिरागान्धी के चरित के विकासक्रम को भूमिका के रूप में प्रस्तुत करके अन्तिम पाँच सर्गो में कवि ने केन्द्र में मन्त्री पद प्राप्त कराने से लेकर उन्नीस सौ छिहत्तर तक की घटनाओं का वर्णन किया है। घटना–प्रधान इस महाकाव्य के अपेक्षाकृत छोटे–छोटे सर्गो में कवि ने अपने युग के एक प्रखर व्यक्तित्व को महाकाव्य का विषय बनाने का सफल प्रयास किया है। यह भी कहा जा सकता है कि अपने आश्रयदाता के प्रशस्तिगान वाली प्राचीन मानसिकता से कवि ने अपने को असंस्पृष्ट रखते हुए यथार्थ को उभारने का प्रयास किया है।[14]

3- **श्रीरामकीर्तिमहाकाव्यम्[15]-** इस महाकाव्य में पच्चीस सर्ग है। यह मूल थाईदेश की रामायण पर आधारित है। जैसा कि स्वयं कविवर शास्त्री ने अपने 'आत्मनिवेदन' में यह स्पष्ट कर दिया है कि उन्होंने थाई–देशों में प्रचलित ''रामकीर्ति'' नाम की रामगाथा को उपजीव्य–ग्रन्थ के रूप में लिया है तथा जो उपाख्यान श्रीमद्वाल्मीकी रामायण अथवा अन्य भारत में प्रसिद्ध रामायणों में उपलब्ध नहीं होते है। उन्हें विशेष रूप से लिया है। जिसमें थाई–रामायण के राम का कथागत वैषिष्ट्य समुन्मिषित हो। [16]

खण्डकाव्यम्

क. षड्ऋतुवर्णनम् - डॉ0 सत्यव्रत शास्त्री जब बारह वर्ष के थे तभी उन्होंने यह खण्डकाव्य लिखा था। इसमें छः ऋतुओं का सुन्दर ढंग से वर्णन किया है। उसमें भी ग्रीष्म ऋतु की दारूणता का वर्णन इस खण्डकाव्य का प्रमुख विषय बन गया है।[17]

ख. श्री गुरू गोविन्दसिंहचरितम् - इस खण्डकाव्य को कवि ने चार सर्गो में विभक्त किया है। जिसमें सिखों के नवम गुरू तेग बहादुर एवं दशम गुरू गोविन्द सिंह जी का धर्म की रक्षा हेतु यवनों सें संघर्ष तथा अपने शिष्यों को धर्मोपदेश देना वर्णित है। मूलतः इसमें गुरूगोविन्द सिंह जी के जीवन–चरित्र को डॉ0 सत्यव्रत शास्त्री द्वारा प्रकाशित किया गया है।[18]

शतककाव्यम्

बृहत्तरं भारतम्- कवि ने उन्नीस सौ अठ्ठावन में इस शतक की रचना की थी, जो कि वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय की संस्कृत पत्रिका ''सरस्वती सुषमा'' में प्रकाशित हुआ था। इस शतक के अन्तर्गत कवि ने भारत के विस्तृत इतिहास को अपनी कवित्व शक्ति से अति–संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया है।[19]

शर्मण्यदेशः सुतरां विभाति– इस शतक काव्य में कवि ने वर्ष उन्नीस सौ पिछहत्तर सन् 1975 में जर्मनी जाने पर वहाँ की अनुभूत यात्रा पर अपना यात्रावृत्तांत लिखा है।

कवि ने वहाँ जिन प्रमुख विश्वविद्यालयों में व्याख्यान दिये, अनेक संस्कृत विद्वानों से भेंट की तथा जिन–जिन स्थानों पर भ्रमण किया उनका ब्यौरेबार वर्णन यहाँ प्राप्त होता है। आधुनिक संस्कृत काव्य में एक नई धारा प्रवाहित करने के कारण इसका विशिष्ट स्थान है।[20]

थाईदेशविलासम्- यह काव्य एक सौ इक्कीस पद्यों में रचा गया है। इसमें कवि द्वारा थाईलैण्ड की सुदृढ़ सांस्कृतिक परम्परा, धार्मिक अवस्था, रामकथा और रामायण के प्रचार का वर्णन करता हुआ। उनकी राजधानी बैंकाक के विविध स्थानों, बाजारों, प्राकृतिक दृश्यों, कलाओं आदि का परिचय कराया गया है। थाईदेश की राजकुमारी का भी सुरम्य वर्णन प्रस्तुत किया गया है।[21]

पत्रकाव्यम् - यह दो खण्डो में रचित है। पत्रकाव्य में अनेक बंधु बाधवों के द्वारा भेजे गये तथा आये हुए पत्रों का संकलन किया है। जो ज्ञानवर्द्धक विषयवस्तु से ओतप्रोत है।[22]

इस प्रकार उनकी संक्षिप्त रचनाओं का विवरण प्रस्तुत किया है।

पुरूस्कार एवं सम्मान- प्रो0 सत्यव्रत शास्त्री में देश और विदेश के 90 पुरूस्कार/सम्मान प्राप्त किये हैं जिनमें भारत सरकार द्वारा प्रदत्त पद्मश्री, पदम्भूषण, संस्कृत में प्रथम ज्ञानपीठ पुरूस्कार, थाई नरेश द्वारा अलंकरण, विदेशों के तीन विश्वविद्यालयों द्वारा मानद् डी0लिट् उपाधि राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरूपति द्वारा महामहोपाध्याय उपाधि, इटली सरकार द्वारा सम्मान। साहित्य अकादमी पुरूस्कार तथा साहित्य अकादमी फैलोशिप एवच्च भारत की प्रत्येक संस्कृत अकादमी के पुरूस्कार सम्मिलित है। डॉ0 सत्यव्रतशास्त्री को भारत सरकार ने 2013 में राष्ट्रीय संस्कृत आयोग का अध्यक्ष नियुक्त किया है।

डॉ0 सत्यव्रतशास्त्री का स्थान आधुनिक सस्कृत साहित्य में बहुत उच्चतम है उन्होंने न केवल अपने देश में अपितु विदेश में अपनी कीर्तिपताका को फहराया है, ओर अपने माता–पिता–गुरू तथा

स्वदेश का भी सम्मान बढ़ाया है।

सहायक सन्दर्भ ग्रन्थ

1. क. आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास पृ.सं.–44
   ख. इन्टरनेट द्वारा उपलब्ध 'प्रो0 सत्यव्रत शास्त्री' एक–परिचय
2. क. आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास पृ.सं. 44
   ख. इन्टरनेट द्वारा प्राप्त 'प्रो0 सत्यव्रत शास्त्री' एक परिचय
3. क. आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास पृ.सं. 44
   ख. इन्टरनेट द्वारा उपलब्ध 'प्रो0 सत्यव्रत शास्त्री' एक परिचय
4. इन्टरनेट द्वारा प्राप्त 'प्रो0 सत्यव्रत शास्त्री' एक परिचय।
5. वही
6. वही
7. वही
8. वही
9. वही
10. प्रथम बार 1960 में प्रकाशित तथा दूसरी बार 1973 में मेहरचंदलक्ष्मनदास दरियागंज दिल्ली द्वारा प्रकाशित।
11. आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास पृ.सं. 44–45
12. भारतीय विधा प्रकाशन दिल्ली से 1976 में प्रकाशित।
13. आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास पृ.सं. 45–46
14. वही
15. मूलामल सचदेव प्रतिष्ठान और अमरनाथ सचदेव प्रतिष्ठान बैकांक द्वारा 1990 में प्रकाशित।
16. आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास पृ.सं. 46
17. जयपुर की पत्रिका संस्कृतरत्नाकर के नवम्बर 1942 मे अंक में उल्लेख।
18. प्रथम बार 1969 में छपी गुरूगोविन्दसिंह फाउंडेशन पटियाला ने। द्वितीय बार साहित्य भण्डार मेरठ ने प्रकाशित की।
19. क. सरस्वती सुषमा 'सम्पूर्णानन्द सं.वि.वि. वाराणसी द्वारा सन् 2014 में।
    ख. इन्टरनेट द्वारा उपलब्ध तथ्य।
20. यात्रावृत 'आधुनिक सं. साहित्य का इतिहास पृ.सं. 192/281
    ख. अखिल भारतीय संस्कृत परिषद् लखनऊ द्वारा प्रकाशित।
21. इस्टर्न बुक लिंकर, दिल्ली ने प्रकाशित की 1979 में ।
22. क. प्रथमखण्ड 1998 में द्वितीय खण्ड 2008 में इस्टर्न बुक लिकर्स में प्रकाशित।
    ख. आधुनिक सं. साहित्य का इतिहास–पत्र–साहित्य पृ.सं. 534